कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

48566

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

प्रवेशिका परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय ..... हिन्दी .....

परीक्षा का दिन.....

दिनांक ...

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14			
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जावेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्र पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1.	~~कबीर का समाज-सुधार~~ ~~स~~ काव्ये कबीर एक समाज - सुधारक"
	2.	कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नही थी।
	3.	कबीर ने कर्म-काण्ड तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया और उन्होंने हिन्दू - मुस्लिम के बीच समन्वय की धारा प्रवाहित कर दोनो को ही शीतलता प्रदान की।
	4.	क्योंकि भारतवासी कमजोर और आलस्य में सोये हुए हैं। और वे अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग नही हैं। तथा स्वार्थ और लालच से भरे हैं।
	5.	जहाँ वीरता नही वहाँ पुण्य का क्षय होता हैं तथा स्वार्थ का उदय होता हैं।
	6.	जब कमजोर लोग जो आलस में डूबे हुये हैं वे लोग अपना कर्त्तव्य समझे दुश्मनों से मुकाबला करें। यह प्रतिशोध की ज्वाला जलती रहे और तलवार को अपना साथी बनाकर पापियों से मुकाबला करते रहें। जब लालच और लोभ को मन से पूरी तरह निकाल दिया जाये तभी धर्म का पालन किया जा सकता है।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

न. (ख) राजस्थान में गहराता जल संकट

(i) प्रस्तावना :- आज जल संकट सबसे बड़ी समस्या हैं। पंच तत्वों में पृथ्वी के बाद महत्वपूर्ण स्थान जल का है जल का अनियंत्रित दोहन किया जा रहा हैं, जिससे लगातार भूमिगत जल का स्तर गिरता जा रहा है जल संकट एक गम्भीर समस्या हैं जिससे निपटन अतिआवश्यक हैं। यदि इसका उचित प्रबंधन नही किया गया तो जल की भारी कमी होगी और एक दिन इस पृथ्वी पर जल समाप्त हो जाएगा। पृथ्वी पर 70% जल उपलब्ध है। जिसमे से केवल 2.5 पानी ही मानव - उपयोगी हैं। जल का सोच समझ कर सही उपयोग करना चाहिए।

(ii) जल संकट के कारण :- जल संकट राजस्थान में एक गंभीर समस्या हैं। राजस्थान का पश्चिमी भाग जल-समस्या से बुरी तरह जूझ रहा हैं। राजस्थान का पश्चिमी भाग रेगिस्तानी है, जहाँ वर्षा पर्याप्त मात्रा में नही होने से अधिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भूमिगत जल का अनियंत्रित दोहन, लोगो द्वारा घरेलू उपयोग में पानी को व्यर्थ बहाना, सार्वजनिक मोटर, ट्यूबवेल आदि से पानी भरते समय उनको चालू ही छोड दिया जाता हैं आदि अनेक कारणों से जल संकट की समस्या बढ़ती जा रही हैं। भूमिगत जल का स्तर निरंतर गिर रहा हैं। यदि इसके संरक्षण के उपाय नही किये गये तो बहुत बडी समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) जल संकट निराकरण के उपाय :- जल संकट से निपटने के लिए लोगों को सचेत होने की जरूरत है। वर्षा जल संरक्षण विधियों का ज्ञान लोगों को होना आवश्यक है। वर्षा जल के संरक्षण के लिए वर्षा के पानी को मकानों की छतों पर इकट्ठा करके उसे टांको में संग्रहित करना चाहिए। जिससे उसका उपयोग आने वाले समय में कर सके। भूमि में पानी के रिसने से भूमिगत जल स्तर बढ़ता है। जल संरक्षण की विधियों जैसे तालाब, बावड़ी, जोहड़ आदि का निर्माण करना चाहिए। घरेलू उपयोग में पानी को व्यर्थ नही बहाना चाहिए। इन बातों का ध्यान रखकर हम जल संकट की समस्या का समाधान कर सकते हैं।

(iv) उपसंहार :- जल एक बहुमूल्य संसाधन है, इसका विवेक पूर्ण न्याय संगत उपयोग करना चाहिए ताकी आने वाले समय में इसका लाभ आने वाली पीढ़ीयाँ भी उठा सकें। यह एक प्राकृतिक सम्पदा है जिसका संरक्षण हम सभी पृथ्वी वासियों का दायित्व है और इसका हमें पालन करना चाहिए। इस संसाधन का न्यायसंगत उपयोग ही आने वाले समय में इस समस्या का समाधान हो सकता हैं क्योंकि 'जल हि जीवन हैं।

BSER 157/2016

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8.

सेवा में,

श्रीमान विद्युत अभियन्ता महोदय,
विद्युत - विभाग,
जयपुर ।

विषय :- नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने के सन्दर्भ में।

मान्यवर,

सविनय नम्र निवेदन है कि हमारे क्षेत्र में अकसर अनियमित बिजली कटौती की समस्या रहती हैं। बिना किसी सूचना के बार-बार बिजली आती जाती रहती है, जिससे लोगों को बड़ी समस्याएँ उठानी पड़ती हैं। हमारी बोर्ड परिक्षाएँ भी अगले महीने से शुरू होने जा रही हैं। हमारी सारी मेहनत इन्हीं दिनों की पढ़ाई पर निर्भर हैं। ऐसे में बार-बार बिजली कटौती से हमें अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। बिजली कटौती से हमारी परीक्षा तैयारी पर बहुत असर पड़ता है। हम तैयारी पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं। अतः आपसे निवेदन है कि इस समस्या पर जल्दी ही निर्णय लिया जावे।

आशा है की यह समस्या जल्दी ही समाप्त हो जाएगी

धन्यवाद

भवदीय
ईशान्त
लक्ष्मीनगर, जयपुर

दिनाँक :- 17-02-18

BSER 157/2016

अंक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है।

(i) सकर्मक क्रिया

(ii) अकर्मक क्रिया

(i) सकर्मक क्रिया :- जिस वाक्य में क्रिया का व्यापार तथा फल दोनों ही कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ते हैं, अर्थात् कर्म आवश्यक होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

(ii) अकर्मक क्रिया :- जिस वाक्य में क्रिया का व्यापार तथा फल दोनों ही कर्ता पर पड़ते हैं, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

10. राधा ने मिठाई खाई।

कारक - कर्त्ता कारक

काल - सामान्य भूतकाल

वाच्य - कर्तृवाच्य

11. बहुब्रीहीसमास - जिस समास में कोईपद प्रधान नही होता है, तथा ~~सम~~ जिसका अन्य अर्थ निकलता हो उसे बहुब्रीही समास कहते हैं।

उदाहरण :- दशानन - दश है आनन जिसके (रावण)

षडानन - षड है आनन जिसके (कार्तिकेय)

12. (क) धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।

(ख) सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	13.	(क.) व्यर्थ प्रयास करना।
		(ख.) एकमात्र सहारा होना।
	14.	जल्द बाजी में कार्य करना। या शीघ्र प्रबन्धन करके कार्य करना।
	15.	शीत को प्रबल ..... पाउक छिपाइ कै।

प्रसंग => प्रस्तुत अवतरण 'सेनापति' द्वारा रचित 'ऋतु वर्णन' से लिया गया है। इस अवतरण में शीत ऋतु का वर्णन किया गया है।

व्याख्या => सेनापति वर्णन करते हुए कहते है कि शीत ऋतु सेनापति की भाँती आ रहा हैं, जिसने दल-बल सहित आक्रमण कर दिया है। शीत ऋतु के प्रभाव से सूर्य का तेवर भी निस्तेज पड गया है, अर्थात् सूर्य भी ठण्डा पड़ गया है। ठण्डी हवाएँ नुकीले तीरों की भाँती लग रही हैं। ~~गर्म~~ गर्म वायु महलों के कोनों में जाकर छिप गयी है। आँखों से आँसू निकल रहे हैं, (धूएँ के कारण) फिर भी लोग आग को घेरकर बैठे हैं। अलाव की गर्मी को अपनी छाती में छिपाये रखते है। मानों की शीत ~~ऋतु~~ से आग की रक्षा कर रहें हों। उस आग को छाती में छिपाये रखते रखते है, मानों की उसे शीत से बचाने का प्रयास कर रहे हों। इस प्रकार शीत ऋतु का वर्णन सेनापति ने बहुत ही सुन्दर किया है।

USER 157/2016

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :— भावाभिव्यक्ति ~~सहज~~ एवं भावपूर्ण है।
(ii) शीत ऋतु को सेनापति ~~की तरह~~ बताया गया है।
(iii) अलंकार व छन्दों की गति यति उचित है।

16. मियाँ नूरे के वकील का - - - - - - - - - - - - - - - - - - घूरे पर डालदी गई।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश 'मुंशी प्रेमचन्द्र' द्वारा लिखित 'ईदगाह' कहानी से लिया गया है। इसमें ग्रामीण परिवेश का वर्णन तथा बच्चों द्वारा ईद के मेले में से खिलोने लाने का वर्णन है।

व्याख्या ⇒ गाँव के बच्चे जब ईदगाह जाते है, तो वहीपर मेले में से सभी बच्चे अलग अलग खिलोने लाते है। उनमें से नूरे वकील का खिलौना लाया। जब उसे घर लाया गया तो उसे नीचे रखना उसके मान-सम्मान के विरुद्ध समझा गया। और उसकी मर्यादा को ध्यान में रखते हुए दीवार पर दो खूटियाँ गाड़कर उस पर लकड़ी का पटरा रखा और उस पर कागज का कालीन बिछाया गया। वकील साहब को राजा की तरह उनके राजासिंहासन पर बैठाया गया। अदालत में तो पँखे लगे हुए होते हैं। उनके लिए सारी सुविधाएं होती है. इस बात को ध्यान में रखकर उन्हें पँखा झुलाया गया। पंखे की हवा से या उसीकी चोट से वकील साहब नीचे गिर गये और मिट्टी में मिल गये। ~~नूरे और उसकी~~ नूरे जोर-जोर से रोने लगा और ~~और~~ वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

विशेष ⇒ (i) भावाभिव्यक्ति सहज एवं भावपूर्ण है।
बच्चों में खिलौने के प्रति लगाव अत्यन्त सुन्दर रूप में
(ii) दिखाया गया है।
भाषा सरल एवं ओजपूर्ण है।
(iii)

17. भावार्थ ⇒ प्रस्तुत सोरठे के माध्यम से कवि 'कृपाराम खिड़िया' अपने सेवक राजाराम को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं की जंगल की आग, रोग तथा दुश्मन इनको रोकने का उपाय पहले ही कर लेना चाहिए क्योंकि ये जब अतिरेक बढ़ जाते हैं तो उन्हें सम्भालना बहुत मुश्किल होता है।
अर्थात् विपत्ति आने पर हमें पहले से ही उसका उपाय सोच लेना चाहिए क्योंकि 'आग लगने पर कुआ खोदना' मूर्खता मानी जाती है। इसलिए विपत्तियों से लड़ने के लिए पहले से ही तैयार रहना चाहिए ताकी विपत्ति आने पर उससे बचा जा सके। अगर इनका उपाय नही किया गया और बाद में अगर इनसे बचने की कोशिश की जाए तो व्यर्थ ही होती है क्योंकि ये उस समय सम्भले नही सम्भलते हैं। इसलिए अगर इनसे बचना है तो पहले ही सभी से बचने का उपाय सोच लेना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. सागरमल गोपा से जब जेलर ने यह कहा की तुम माफीनामे पर हस्ताक्षर कर दो और महारावल से माफी माँग लो वो तुम्हें स्वतन्त्र कर देंगे। इस तरह इनके अत्याचार सहते हुए और स्वतन्त्रता के लिए लडते हुए तुम इस काल कोठरी मे ही मरकर रह जाओगे किसी को तुम्हारे बलिदान के बारे मे पता नही चलेगा तब सागरमल ने कहा की नींव का पत्थर कब कहता है की उसकी प्रशंसा हो या उसको सभी की सहानुभूति प्राप्त हो। एक स्वतंत्रता सेनानि तो केवल अपने देश की स्वतन्त्रता की खातिर लडना चाहता है। एक व्यक्ति यज्ञ में आहूति देते समय यह नही देखता की उसकी आहूति से आग की लपटे कितनी ऊपर उठ रही है, वह तो केवल आहूति देना ही अपना धर्म समझता है। उसी प्रकार स्वतंत्रता सेनानि भी केवल स्वतन्त्रता की खातिर प्रयत्न कर सकता है, उसके लिए लड सकता है, मर सकता है; वह इसी को अपना धर्म मानता है। वह यह नही चाहता की उसका नाम लिया जावे या लोग उसे याद करे वह तो केवल मातृभूमि के लिए प्राण देने में ही अपना धर्म समझता है।

19. गोपियाँ श्रीकृष्ण के सम्मोहन में डूबकर श्रीकृष्ण की रूप माधुरी की दासी बन गयी थी। वे श्रीकृष्ण के पास रहना चाहती थी श्रीकृष्ण की दासी बनकर उनकी सेवा करना चाहती थी ताकि वे श्रीकृष्ण के पास रह सके और इसी लालच से वे श्रीकृष्ण की दासी बन गई। वे श्रीकृष्ण के सम्मोहन में मधुमक्खियों की भाँती ही डूब गई थी। जिस प्रकार मधुमक्खियाँ शहद में डूब जाती है, उसी प्रकार गोपियाँ भी कृष्ण की रूप माधुरी में डूब गई है।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी द्वारा

20. "कल और आज' कविता में नागार्जुन ने ग्रीष्म व वर्षा ऋतु का बेहद सजीव अंकन किया है। ग्रीष्म ऋतु में लोगों की परेशानियाँ बहुत बढ़ जाती है सब लोग तथा प्राणी गर्मी से व्याकुल रहते है और वर्षा ऋतु आते ही सभी के दिलों को ठण्डक मिलती है।
इस कविता में नागार्जुन ने अलंकार, रस ध्वनि का भावानुकूल प्रयोग किया है। भावाभिव्यक्ति सहज एवं भावानुकूल है।

21. 'कन्यादान' कविता में एक माँ की अपनी बेटी के प्रति चिन्ता प्रकट की गयी है। वह अपनी भोली भाली बेटी से कहती है लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखना, अर्थात् विनम्र तथा कोमल तो रहना पर अत्याचार सहन मत करना, अत्यन्त कमजोर मत बनी रहना। ससुराल वालों के बहकावे में मत आना और अन्याय व अत्याचार का डट कर सामना करना। अर्थात् उन पर किये जाने वाले अत्याचार आदि का सामना करना, चुपचाप सब सहन नहीं करना।

22. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा लिखा गया निबन्ध है। इसमें उन्होंने व्यंग्यपूर्ण उचित बोली का प्रयोग किया है। फारसी तथा हिन्दी के शब्दों का यथावसर प्रयोग किया है।
मुहावरें तथा लोकोक्तियों का वर्णन तथा उपयोग तथा व्यंग्य का प्रयोग उचित रूप से किया गया है। इसकी भाषा-शैली बहुत सरल और व्यंग्यात्मक है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	23.	गौरा को ग्वाले ने ईर्ष्यावश सुई खिला दी थी जो उसके रक्तसंचार के साथ उसके हृदय को पार कर गयी थी जिससे रक्तसंचार रुकने से गौरा की मृत्यु हो गयी। सूई गौरा के हृदय को भेदकर पार चली गयी थी जिससे उसकी मृत्यु हो गई।
	24.	क्योंकि हामिद की दादी अमीना के पास चिमटा नहीं था वह जब तवे पर रोटियाँ सेंकती थी तो उसकी उँगलियाँ जल जाती थी ~~सोच~~ हामिद को जब यह बात याद आयी तो उसने दादी के लिए चिमटा ही खरीदने का निश्चय किया।
	25.	उक्त पंक्ति में 'वर्षा ऋतु' का वर्णन है।
	26.	'मातृ-वन्दना' कविता में कवि ने अपने श्रम का श्रेय 'भारत-माता' ~~को दिया है~~। अथवा माँ भारती को दिया है।
	27.	आध्यात्मिक दृष्टि से कन्याकुमारी भारत के चार पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। इस कारण इसका अत्यन्त महत्व है। यह सौन्दर्य से परिपूर्ण है, यहाँ तीन सागरों का संगम होता है।
	28.	परनिन्दा के विषय में दादू ने कहा है कि 'दूसरों की निन्दा वही करता है' जिसके हृदय में राम का निवास नहीं होता।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

29 (i) तुलसीदास

तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में संवत 1589 में हुआ था। इनके पिता सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम आत्माराम तथा माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास के जन्म के समय उनकी अवस्था पाँच वर्ष के बालक के समान थी मुँह में दाँत भी निकले हुए थे, भय की आशंका के चलते माता-पिता ने इन्हे त्याग दिया तथा मुनिया नामक दासी को दे दिया।
तुलसीदास जी की पत्नि रत्नावली बिदुषी थी। उनके तानों से इन्होंने गृहत्याग कर दिया और अयोध्या चले गये और 1631 ई. में रामचरितमानस की रचना की।
संवत 1680 में इनकी मृत्यु काशी मे हुयी।

रचनाएँ => रामचरित मानस, रामाज्ञाप्रश्न, बरवैरामायण जानकीमंगल, पार्वतिमंगल, रामललानहछू आदि हैं।

(ii) मुन्शी प्रेमचन्द

मुन्शी प्रेमचन्द का जन्म 1880 ई. में हुआ था। इनका ~~जन्म~~ जन्म ~~काशी~~ वाराणसी के लमही ग्राम मे हुआ था। इनका मूल नाम धनपतराय था। इनके चाचा बचपन मे इन्हें प्यार से नवाब कहकर पुकारते थे। प्रेमचन्द ने उर्दू मे नवाबराय नाम से लेखनकार्य किया। उनका पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' नाम से 1907 मे प्रकाशित हुआ। देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत होने के कारण अंग्रेजी सरकार ने इस पर रोक लगा दी तथा लेखक

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

को भविष्य में ऐसा लेखनकार्य न करने की सलाह दी। इनकी मृत्यु सन् 1936 ई. में हुयी। ये हिन्दी जगत में कलम के सिपाही के नाम से मशहूर थे।

रचनाएँ ⇒ कहानी संग्रह - मानसरोवर (आठ भाग)
काव्य - गोदान, गबन, रंगभूमि, कर्मभूमि, प्रेमाश्रय
उपन्यास - कर्बला, संग्राम

30. (i.) ओवरटेकिंग निषेध
(ii.) प्रवेश निषेध
(iii.) आगे से दाएँ निषेध
(iv.) आना निषेध

समाप्त

BSER 157/2016